स्वतंत्रता आंदोलन

उर्दू शायरी के आईने में

पुस्तिका सीरीज़-95

प्रकाशक :

isd **इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी**

फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस, 62-ए,

लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका, नई दिल्ली-110067

टेलीफोन : 091-011-26177904, टेलीफैक्स : 091-011-26177904

ई-मेल : prakashan.isd@gmail.com, notowar.isd@gmail.com

वेबसाइट : www.isd.net.in

प्रकाशन वर्ष : 2021

अपनी बात

हमीदिया गर्ल्स पीजी कॉलेज, प्रयागराज के उर्दू विभाग ने 75वीं स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नई उर्दू कविता के प्रतिनिधि शायरों की ऐसी नज़्मों का संकलन प्रस्तुत किया है जिनमें आज़ादी का जज़्बा, जोश, तड़प और देशभक्ति कूट-कूटकर भरी हुई है जो ये दर्शाती हैं कि उर्दू का भी आज़ादी की लड़ाई में एक उल्लेखनीय और सराहनीय योगदान रहा है जिससे नई पीढ़ी को अवगत होना चाहिए। आईएसडी ने खड़ी बोली के दोनों रूप उर्दू और हिंदी को एक-दूसरे के निकट लाने की अपनी कोशिशों के अंतर्गत अपने पाठकों के लिए इस संकलन का अपनी पुस्तिका सीरीज़ के लिए चयन किया है जिसे हम कॉलेज के आभार के साथ यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

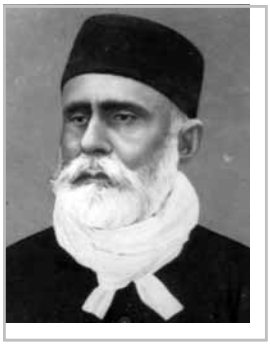

ख़वाजा अल्ताफ़ हुसैन 'हाली'

मरसिया देहली-ए-मरहूम

तज़किरा[1] देहली-ए-मरहूम का ऐ दोस्त न छेड़
न सुना जाएगा हमसे ये फ़साना[2] हरगिज़
दास्ताँ गुल की ख़िज़ाँ में न सुना ऐ बुलबुल
हंसते हंसते हमें ज़ालिम न रुलाना हरगिज़
ढूँढ़ता है दिल-ए-शोरीदा[3] बहाने मुतरिब[4]
दर्द अंगेज़ ग़ज़ल कोई न गाना हरगिज़
सोहबतें अगली सी मुसव्विर[5] हमें याद आयेंगी
कोई दिलचस्प मुरक़्क़ा[6] न दिखाना हरगिज़
ले के दाग़ आयेगी सीने पे बहुत ऐ सय्याह
देख इस शहर के खंडहरों में न जाना हरगिज़[7]
चप्पा चप्पा पे हैं याँ गौहर-ए-यकता[8] तह-ए-ख़ाक[9]
दफ़्न होगा न कहीं इतना ख़ज़ाना हरगिज़
मिट गये तेरे मिटाने के निशाँ भी अब तो
ऐ फ़लक इस से ज़्यादा न मिटाना हरगिज़
बख़्त[10] सोये हैं बहुत जाग के ऐ दौर-ए-जमाँ[11]
न अभी नींद के मातों को जगाना हरगिज़
कभी ऐ इल्म-ओ-हुनर घर था तुम्हारा दिल्ली
हमको भूले हो तो घर भूल न जाना हरगिज़
गालिब-ओ-शेफ़्ता-ओ-नय्यर-ओ-आजुरदा-ओ-ज़ौक़[12]
अब दिखायेगा न शक्लों को ज़माना हरगिज़
रात आख़िर हुई और बज़्म हुई ज़ेर-ओ-ज़बर[13]
अब न देखोगे कभी लुत्फ़[14] शबाना[15] हरगिज़
बज़्म-ए-मातम[16] तो नहीं बज़्म-ए-सोख़न[17] है 'हाली'
याँ मुनासिब नहीं रो-रो के रूलाना हरगिज़

1— चर्चा 2— कहानी 3— परेशान दिल 4— गाने वाला, क़व्वाल 5— तस्वीर बनाने वाला 6— अलबम 7— बिल्कुल नहीं, कभी नहीं 8— अनमोल मोती 9— ज़मीन के नीचे 10— किस्मत 11— वर्तमान युग 12— सब शायरों के नाम है 13— ऊँच-नीच, उथल-पुथल 14— मजा 15— रात 16— शोक सभा 17— कवि सम्मेलन।

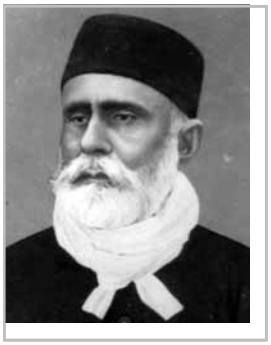

ख़वाजा अल्ताफ़ हुसैन 'हाली'

हुब्ब-ए-वतन

ऐ सिपहर-ए-बरीं[1] के सय्यारों[2]
ऐ फ़ज़ा-ए-ज़मी के गुलज़ारों
ऐ पहाड़ो की दिल फरेब फ़जा
ऐ लबे जू[3] की ठंडी-ठंडी हवा
ऐ अनादिल[4] के नग़मा-ए-सहरी
ऐ शब-ए-माहताब[5] तारों भरी
ऐ नसीम-ए-बहार[6] के झोंको
दहर-ए-ना पाएदार[7] के झोंकों
तुम मेरी दिल लगी के सामाँ थे
तुम मेरे दर्द-ए-दिल के दरमाँ थे
ऐ वतन ऐ मेरे बहिश्त-ए-बरीं
क्या हुये तेरे आसमान-ओ-ज़मीं
रात और दिन का वो समाँ न रहा
वो ज़मीं और वो आसमाँ न रहा
तेरी दूरी है मोरिद-ए-आलाम[8]
तेरे छुटने से छुट गया आराम
काट खाता है बाग़ बिन तेरे
गुल है नज़रों मे दाग़ बिन तेरे
मिट गया नक़्श[9] कामरानी[10] का
तुझ से था लुत्फ़[11] ज़िन्दगानी का
सच बता तू सभी को भाता है
या कि मुझ से ही तेरा नाता है
मैं ही करता हूँ तुझपे जान निसार[12]
या कि दुनिया है तेरी आशिक़-ए-ज़ार[13]
सब को मीठी निगाह से देखो
समझो आँखो की पुतलियाँ सब को
मुल्क है इत्तेफ़ाक़[14] से आज़ाद
शहर है इत्तेफ़ाक़ से आबाद
इज़्ज़त-ए-क़ौम चाहते हो अगर
जा के फैलाओ उन में इल्म-ओ हुनर
न रहेंगे सदा यही दिन रात
याद रखना हमारी आज की बात

1— नवाँ आकाश 2— सितारे 3— नहर किनारे 4— बुलबुलें 5— रात का चाँद 6— बसंत की हवा 7— नश्वर जगह 8— दुनिया का गुनहगार 9— निशान 10— कामयाबी 11— मज़ा 12— कुर्बान 13— सच्चा प्रेमी, प्रेम में तबाह हाल 14— एक मत।

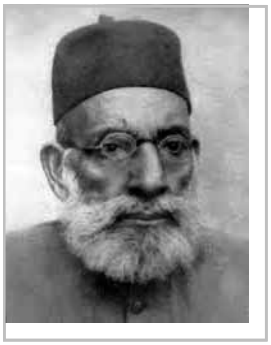

हसरत मोहानी

कुछ इंक़लाबी व एहतेजाजी अशआर

1.
रूह आज़ाद है ख़याल आज़ाद
जिस्म 'हसरत' की क़ैद है बेकार

2.
अच्छा है अहल-ए-ज़ोर[1] किये जाएं सख़्तियाँ
फैलेगी यूँ ही शोरिश-ए-हुब्ब-ए-वतन[2] तमाम

3.
खुशी से ख़त्म कर ले सख़्तियाँ क़ैद-ए-फिरंग[3] अपनी
कि हम आज़ाद हैं बेगाना-ए-रंज-ए-दिल आज़ारी[4]

4.
कुछ शक नहीं इसमें कि वतन की है तरक़्क़ी
हम रिश्तगी-ए-सुब्बहे[5] जुन्नार[6] पे मौक़ूफ[7]

5.
मिट चलें यूँ ही ना क्यों दैर[8]-ओ-हरम[9] के झगड़े
एक रिश्ता भी तो है सुब्बहो जुन्नार के बीच

6.
कल के मक़बूल[10] आज है मरदूद
आह इस दौर-ए-इंक़लाब के रंग

7.
समझते हैं सब अहल-ए-मग़रिब[11] की चालें
मगर फिर भी बैठे हैं बेकार हो कर

8.
मैं मुब्तला-ए-रंज-ए-वतन हूँ वतन से दूर
बुलबुल के दिल में यादे चमन है चमन से दूर

9.
इक नजात[12]-ए-हिन्द की दिल से है तुझको आरज़ू
हिम्मते सर बुलन्द से पास का इन्सेदाद[13] कर

10.
क्या हुईं आसानियां वह रोज़गार-ए-वस्ल की
अब तो हम हैं और रंज-ए-बेशुमार इंतेज़ार

11.
हुर्रियत-ए-कामिल[14] की क़सम खा के उठे हैं
अब साया-ए-ब्रिटिश की तरफ जाएंगे क्या हम

12.
दश्मन के मिटाने से मिटा हूँ न मिटूँगा
और यूँ तो मैं फानी[15] हूँ फना मेरे लिए है
13.
रस्म-ए-जफा[16] कामयाब देखिये कब तक रहे
हुब्ब-ए-वतन मस्त ख़्वाब देखिये कब तक रहे

दिल पे रहा मुद्दतों ग़लबा[17]-ए-यास[18]-ओ-हरास[19]
कब्ज़ा-ए-हज़्म[20]-ओ-हिजाब[21] देखिये कब तक रहे

दौलत-ए-हिन्दोस्ताँ कब्ज़ा-ए-अगियार[22] में
बे अदद बे हिसाब देखिये कब तक रहे

है तो कुछ उखड़ा हुआ बज़्म-ए-हरीफाँ[23] का रंग
अब ये शराब-ओ-कबाब देखिये कब तक रहे

1— जुल्म करने वाला 2— देशभक्ति का शोर 3— अंग्रेज़ों की क़ैद 4— सितम, जुल्म 5— जपमाला 6— जनेऊ 7— निर्भर 8— मन्दिर 9— इस्लामिक केंद्र, काबा 10— माना हुआ, सम्मानित, प्रसिद्ध 11— अंग्रेज़ लोग, पश्चिमी 12— छुटकारा, रिहाई 13— रोकथाम करना 14— पूरी तरह आज़ाद होना 15— मिटने वाला 16— जुल्म का तरीका 17— छा जाना, हावी होना 18— ना उम्मीद होना 19— गिरफ्तार 20— होशियार 21— परदा 22— गैर, अजनबी मुराद दुश्मन 23— दुश्मन।

नोट : नम्बर गजल हुकूमत ने ज़ब्त कर ली थी जिसका रिकॉर्ड 'ज़ब्त शुदा अदबियात' नेशनल आर्काइव में मौजूद है।

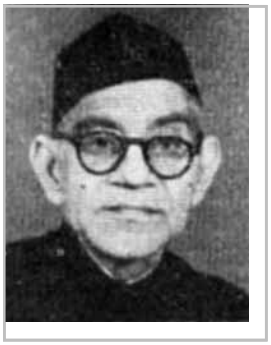

आनन्द नारायण मुल्ला

आ ही गया

हुक्मे-माजूली[1] बनामे-तीरगी[2] आ ही गया
वादिए-शब[3] में पयाम-ए-रौशनी[4] आ ही गया

चीरता जुल्मत[5] को तह दर तह सहाब अन्दर सहाब[6]
फिर उफक़[7] पर आफ्ताबे-ज़िन्दगी[8] आ ही गया

अंजुमन मे तिश्नाकामों[9] की बसद-मीना-ओ-जाम[10]
आज साक़ी लेके इज़्ने-मैकशी[11] आ ही गया

तीशा-ए-फरहाद[12] बहरे कस्रे ख़ुसरो[13] ताव के
कोहकन[14] की ज़द मे कस्रे-ख़ुसरवी[15] आ ही गया

1— पद से हटाने का हुक्म 2— अन्धकार के नाम 3— रात की वादी 4— प्रकाश का सन्देश 5— अन्धकार 6— बादल 7— क्षितिज 8— जीवन का सूर्य 9— प्यासा 10— सुराही और प्याला 11— मदिरा, पान का निमंत्रण 12— फरहाद की कुदाल 13— खुसरो के महल के लिए 14— पहाड़ काटने वाला, फरहाद 15— खुसरो का महल।

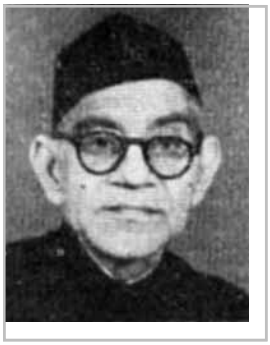

आनन्द नारायण मुल्ला

लहू का टीका

वतन फिर तुझको पैमान-ए-वफ़ा[1] देने का वक़्त आया
तेरे नामूस[2] पर सब कुछ लुटा देने का वक़्त आया

वह खित्ता[3] देवताओं की जहाँ आरामगाहें थीं
जहाँ बेदाग़ नक़्श-ए-पाऐ इंसानी से राहें थीं
जहाँ दुनिया की चीखें थीं न आंसू थे ना आहें थीं
उसी को जंग का मैदां बना देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमान-ए-वफ़ा देने का वक़्त आया

रुपहली बर्फ पर है सुर्ख ख़ूँ की आज एक धारी
सहर की नर्म किरनों ने यहाँ दोशीज़गी[4] खोई
हुई आलूदा यह मासूम दुनिया अप्सराओं की
अब इन नापाक धब्बों को मिटा देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमान-ए-वफ़ा देने का वक़्त आया

हर इक आंसू का शोला जज़्ब करके दिल के खिर्मन[5] में
हर इक फरियाद की लै ढाल कर इक अज़्मे-आहन[6] में
हर इक नारे की बिजली करके आसूदा नशेमन[7] में
फिर इस बिजली को दुशमन पर गिरा देने का वक़्त आया
वतन फिर तुझको पैमान-ए-वफ़ा देने का वक़्त आया

1— वफा का वचन 2— इज्ज़त 3— धरती का टुकड़ा 4— कुँवारापन 5— खलियान 6— फौलादी इरादे 7— घोंसला।

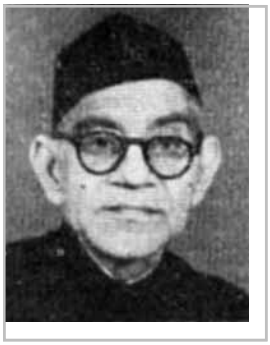

आनन्द नारायण मुल्ला

'ज़मीन-ए-वतन'

ज़मीन-ए-वतन ऐ ज़मीन-ए-वतन
अज़ल[1] में जहाँ सब से पहले हयात[2]
लिये अपनी आगोश[3] में कायनात[4]
जलाती हुई शम्म-ए-ज़ात-ओ-सिफात[5]
हेजाब[6]-ए-अदम[7] से हुई जल्वा ज़न[8]
ज़मीन-ए-वतन ऐ ज़मीन-ए-वतन
जहाँ बिस्तर-ए-बर्फ से मस्त-ए-ख़्वाब
उठा आँख मलता हुआ आफताब[9]
लुटाती हुई जल्वा-ए-बे नक़ाब
जहाँ आई पहली सुनहरी किरन
ज़मीन-ए-वतन ऐ ज़मीन-ए-वतन
जहाँ पहले तख़्लीक़[10]-ए-इन्साँ हुई
तेरी रहमत उसकी निगेहबाँ[11] हुई
ख़िरद[12] उसकी गहवार-ए-जुन्बाँ[13] हुई
बशर ने तमद्दुन के सीखे चलन
ज़मीन-ए-वतन ऐ ज़मीन-ए-वतन
उख़ूवत[14] का फिर हाथ में जाम ले
मसावात[15]-ए-इंसाँ का फिर नाम ले
ख़यालात-ए-माज़ी[16] से फिर काम ले
वतन को बना दर हक़ीक़त वतन
ज़मीन-ए-वतन ए ज़मीन-ए-वतन

1— प्रारम्भ 2— जीवन 3— गोद 4— दुनिया 5— योग्यता, ख़ूबी 6— परदा 7— ना मैजूदगी, मिटना 8— दिखाई देना 9— सूरज 10— पैदा होना, बनाना 11— देखभाल करना, सुरक्षा करना 12— अक़्ल 13— झूला, हिलने वाला 14— भाईचारा 15— समानता 16— गुज़रा, समय, भूतकाल।

पंडित बृज नारायण चकबस्त

गोपाल कृष्ण गोखले

लरज़[1] रहा था वतन जिस ख़याल के डर से
व आज खून रुलाता है दीदा-ए-तर[2] से
सदा[3] ये आती है फल फूल और पत्थर से
ज़मीं पे ताज गिरा क़ौम-ए-हिन्द के सर से
हबीब[4] क़ौम का दुनिया से यूँ रवाना हुआ
ज़मीं उलट गई क्या मुंक़लिब[5] ज़माना हुआ
बढ़ी हुई थी नहूसत ज़वाल[6]-ए-पैहम[7] की
तेरे ज़हूर से तक़दीर क़ौम की चमकी
निगाहे-ए-यास[8] थी हिंदूस्ताँ पे आलम[9] की
अजीब शय थी मगर रौशनी तेरे दम की
तुझी को मुल्क में रौशन दिमाग़ समझे थे
तुझे ग़रीब के घर का चराग़ समझे थे
वतन को तूने साँवारा किस आब-ओ-ताब के साथ
सहर का नूर बढ़े जैसे आफ़्ताब[10] के साथ
चुने रिफ़ाह[11] के गुल हुस्न-ए-इंतिख़ाब[12] के साथ
शबाब क़ौम का चमका तेरे शबाब के साथ
जो आज नश-ओ-नुमा[13] का नया ज़माना है
ये इंकलाब तेरी उम्र का फ़साना[14] है
वतन की जान पे क्या-क्या तबाहियाँ आईं
उमँड उमँड के जहालत की बदलियाँ आईं
चराग-ए-अम्न[15] बुझाने को आँधियाँ आईं
दिलों में आग लगाने को बिजलियाँ आईं
इस इंतिशार[16] में जिस नूर का सहारा था
उफक़[17] पे क़ौम के वह एक ही सितारा था
रहेगा रंज ज़माने में यादगार तेरा
वह कौन दिल है कि जिस में नहीं मज़ार तेरा
जो कल रक़ीब[18] था है आज सोगवार[19] तेरा
ख़ुदा के सामने है मुल्क शर्मसार[20] तेरा
पली है क़ौम तेरे साया-ए-करम[21] के तले
हमें नसीब थी जन्नत तेरे कदम के तले

1— काँपना 2— भीगे नेत्र 3— आवाज़ 4— दोस्त 5— उलट जाना 6— पतन 7— लगातार 8— ना उम्मीदी 9— दुनिया 10— सूरज 11— सुख, सहूलत 12— चयन की सुंदरता 13— तरक़्क़ी आगे बढ़ना 14— कहानी 15— शांति 16— बिखराव, उथल-पुथल, हलचल 17— जहाँ आसमान का किनारा ज़मीन से मिला दिखाई देता है 18— दुश्मन 19— उदास 20. शार्मिन्दा 21— मेहरबानी।

पंडित ब्रज नारायन चकबस्त

ख़ाक-ए-हिन्द

ऐ ख़ाक[1]-ए-हिन्द तेरी अज़मत[2] में क्या गुमां है
दरिया-ए-फैज़-ए-कुदरत[3] तेरे लिए रवां है
तेरी जबीं से नूर-ए-हुस्न-ए-अज़ल[4] अयां है
अल्लाह रे ज़ेब-ओ-ज़ीनत[5] क्या औज-ए-इज़्ज़ो[6] शां है

हर सुब्ह है ये ख़िदमत ख़ुर्शीद[7] पुरज़िया[8] की
किरनों से गूंधता है चोटी हिमालया की

गौतम ने आबरु दी इस माबद[9]-ए-कुहन[10] को
'सरमद' ने इस ज़मी पर सदक़े किया वतन को
'अकबर' ने जाम-ए-उल्फत बख़्शा इस अंजुमन[11] को
सींचा लहू से अपने 'राणा' ने इस चमन को

सब शूरवीर अपने इस ख़ाक में निहां[12] हैं
टूटे हुए खंडहर हैं या उनकी हड्डियाँ हैं

है जूए शीर हमको नूरे सहर[13] वतन का
आँखों में रौशनी है जलवा इस अंजुमन का
है रश्क महर[14] ज़र्रा इस मंज़िल-ए-कुहन का
तुलता है बर्ग-ए-गुल से कांटा भी इस चमन का

गर्द-ओ-गुबार यां का ख़िलअत[15] है अपने तन की
मर कर भी चाहते हैं ख़ाक-ए-वतन कफ़न की

1— मिट्टी 2— बडाई 3— कुदरत के फायदे 4— प्रारम्भ, शुरुआत 5— सजावट, सुन्दरता 6— इज़्ज़त और शान की बुलंदी 7— सूरज 8— रौशनी 9— प्रार्थना घर 10— पुराना 11— महफ़िल 12— छुपा 13— सुबह 14— सूरज 15— वह कपड़ा जो इनाम में बादशाह की तरफ से मिले, कीमती कपड़ा।

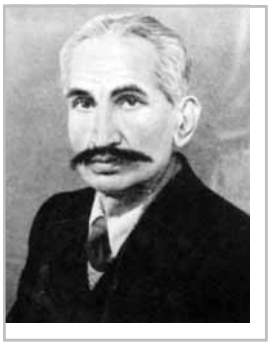

तिलोकचन्द महरुम

जय हिन्द

पैदा उफक-ए-हिन्द[1] से है सुबह के आसार
है मंज़िले आख़िर में गुलामी की शबे-तार[2]
आमद सहरे-नौ[3] की मुबारक हो वतन को
पामाल-ए-महन[4] को

मशरिक मे ज़ियारेज़[5] हुआ सुबह का तारा
फ़र्खन्दा-ओ-ताबिन्दा-ओ-जाँबख़्श-ओ दिलआरा[6]
रौशन हुए जाते हैं दरो-बाम वतन के
ज़िन्दान-ए-कुहन[7] के

'जयहिन्द' के नारों से फ़ज़ा गूँज रही है
जयहिन्द की आलम में सदा गूँज रही है
यह वलवला यह जोश यह तूफ़ान मुबारक
हर आन मुबारक

अहले-वतन आपस में उलझने का नहीं वक़्त
ऐसा न हो ग़फ़्लत में गुज़र जाये कहीं वक़्त
लाज़िम[8] है कि मंज़िल के निशां पर हो निगाहें
पुरपेच[9] हैं राहें

1— हिन्द का क्षितिज 2— अन्धेरी रात 3— नयी सुबह का आगमन 4— दु:ख से कुचला 5— रौशनी फैलाने वाला 6— प्राणदायक, आकर्षक और खुश 7— पुराना जेलखाना 8— अनिवार्य 9— उलझावदार।

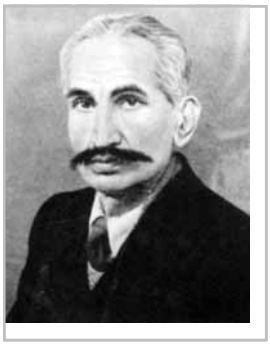

तिलोकचन्द महरुम

पयाम-ए-सुलह[1]

लाई पैगाम मौजे-बादे-बहार[2]
कि हुई खत्म शोरिशे-कश्मीर[3]

दिल हुए शाद अम्न कोशों के
है यह गांधी के ख्वाब की ताबीर

सुलहजोई[4] में अम्नकोशी[5] में
काश होती न इस कदर ताख़ीर[6]

ताकि होता न इस इस कदर नुक्सां
और होती न दहर[7] में तश्हीर[8]

बच गये होते नौजवां कितने
जिनको मरवा दिया बसर्फे-कसीर[9]

ज़िक्र क्या उसका, जो हुआ सो हुआ
उन बेचारों की थी यही तक़दीर

काम लें अब ज़रा तहम्मुल[10] से
दोनों मुल्कों के साहबे-तदबीर[11]

1— शांति का संदेश 2— बहार की हवा 3— कश्मीर की बगावत 4— शांतिपूर्वक रहना 5— शांति की कोशिश 6— देर 7— दुनिया 8— शोहरत, प्रसिद्ध 9— बहुत ज्यादा खर्च के साथ 10— धैर्य, शान्ति 11— समझदार लोग।

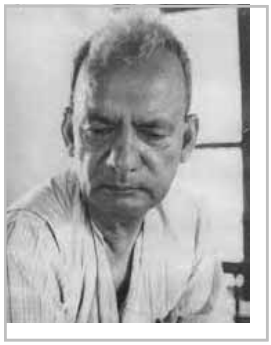

इक़बाल अहमद सुहेल

मुबारकबाद आज़ादी

गुलज़ारे-वतन की कोई देखे तो फबन[1] आज
सरशार[2] है खुशबू से हर इक दश्तो-चमन[3] आज
गुंचों[4] को सबा तोड़ गयी क़ुफ्ले-दहन[5] आज
है हर गुले-ख़न्दाँ[6] की ज़बाँ पर यह सुख़न[7] आज़
सद शुक्र कि टूटा दरे-ज़िन्दान-ए-मिहन[8] आज

फिर मौज ने डूबी हुई कश्ती को उभारा
बिगड़ी हुई तकदीर को हिम्मत ने सँवारा
खोई हुई अज़मत वह मिली हमको दुबारा
रौशन है फिर आज़ादि-ए-मशरिक[9] का सितारा
यह ख़ुशख़बरी लाती है सूरज की किरन आज

रुख़सत है शबे-तार गुलामी का अंधेरा
वह सामने है सुब्हे-सआदत का सवेरा
भारत से विदेशी का उखड़ने लगा ड़ेरा
लहराये न क्यों अज़्मते-क़ौमी[10] का फरेरा
आज़ाद हुआ कैंदे-ए-गुलामी से वतन आज

1— सजावट 2— डूबा हुआ 3— उपवन 4— कली 5— मुँह का ताला 6— हँसता हुआ फूल 7— बातचीत 8— कष्ट के जेलख़ाने का दरवाजा 9— मशरिक़ की आज़ादी 10— क़ौम की बड़ाई।

सिकन्दर अली वज्द

आफ़्ताब-ए-ताज़ा[1]

दामने-चाक[2] अश्के-मसर्रत[3] से तर है आज
दो सै बरस के बाद तुलूए-सहर[4] है आज

शमा-ए-यक़ीं[5] के दम से शिकस्तों[6] की शब[7] कटी
महरे-मुबी[8] पयम्बरे-फत्हो-ज़फर[9] है आज

सामाने-सद हज़ार बहारां लिए हुए
अपनी जिलू में गर्दिशे-शम्सो-क़मर[10] है आज

मुर्दा दिलों मे दौड़ गया खून-ए-ज़िन्दगी
चेहरों पे हुर्रियत[11] की शफक़[12] जल्वागर है आज

पानी की बूँद क़तर-ए-आबे-हयात है
मौजे-हवा में मरहम-ए-ज़ख़्मे जिगर है आज

गुलचीं के साथ दौर-ए-तही दामनी[13] गया
हर शाख़े-गुल से बारिशे-लालो-गुहर है आज

गुलशन का इंक़िलाब ने नक्शा बदल दिया
शाहीं[14] शिकारे-बुलबुले बे बाला-ओ-पर है आज

उड़ती हैं गर्दे-राह[15] की मानिन्द मंज़िलें
बेबाक रख्ते-उम्र[16] जो गर्मे-सफ़र है आज

1— नया सूरज 2— फटा हुआ दामन 3— खुशी के आँसू 4— सुबह होना 5— विश्वास का चराग़ 6— हार 7— रात 8— प्रकाशमान सूरज 9— विजय 10— सूरज, चाँद 11— आज़ादी 12— सूर्य की लाली 13— खाली दामन 14— बाज पक्षी 15— राह की धूल 16— उम्र का घोड़ा।

सिकन्दर अली वज्द

बशारत

चेहरे पे बिखर जायेंगे अनवार[1]-ए-तबस्सुम[2]
पेशानी[3]-ए-गीती[4] की शिकन[5] गुल न रहेगी

खुल जायेगी सब पर दरे मैख़ान[6]-ए-इशरत[7]
इफरात-ए-गम-व-रंज-व-मेहन[8] कल न रहेगी

यह दुश्मने इंसाफ-व-करम, जुल्म की देवी
बेकस का लहू पी के मगन कल न रहेगी

अरबाब-ए-हुनर[9] शाद[10]-व-सरअफ़राज़[11] रहेंगे
यह सरकशी[12]-ए-दार-व-रसन[13] कल न रहेगी

1— नूर, प्रकाश 2— मुस्कुराहट 3— माथा 4— ज़मीन 5— सिकुड़न 6— शराबखाना 7— आराम 8— गम, दुख 9— हुनरमन्द लोग 10— खुश 11— कामयाब 12— बग़ावत 13— फाँसी, सूली (लकड़ी व रस्सी)।

महाराज बहादुर बर्क देहलवी

अहल-ए-हिन्द

इंकलाब-ए-दहर[1] से सब शान वाले मिट गए
रोम वाले मिट गए यूनान वाले मिट गए
सीरिया वाले मिटे तूरान वाले मिट गए
कौन कहता है कि हिन्दोस्तान वाले मिट गए
नक्श-ए-बातिल हम नहीं जिसको मिटाए आसमां
हम नहीं मिटने के जब तक है बिना[2]-ए-आसमां
खाक से इस देश के पैदा हुए वह नामवर
नक़्श[3] जिनके कारनामे हैं बिसात-ए-दहर पर
दबदबे से जिनके झुकते थे सर अफ़राज़ों के सर
जिनका लोहा मानते हैं हुक्मरान-ए-बहर-व-बर[5]
तेग़[6]-व-तरकश के धनी थे रज़्म गह[7] में फर्द थे
इस शुजाअ़त[8] ये तुर्रा है सरापा दर्द थे
क्या थे अहल-ए-हिन्द ये चख़[9]-ए-कुहन से पूछ लो
या हिमालय की गुफाओं के दहन से पूछ लो
अपना अफ़साना लबे गंग-व-जमन से पूछ लो
पूछ लो हर ज़र्रा-ए-ख़ाक-ए-चमन से पूछ लो
अपने मुंह से क्या बताएं हम कि क्या वो लोग थे
नफ्स कश नेकी के पुतले थे मुजस्सम[10] योग थे

1— दुनिया 2— बुनियाद 3— निशान 4— महानता महान 5— सागर व सूखी ज़मीन अर्थात पूरी दुनिया 6— तलवार 7— लड़ाई का मैदान 8— बहादुरी 9— आसमान 10— पूरी तरह ठोस जिस्म।

दुर्गा सहाय सुरूर जहांनाबादी

गुल्ज़ार-ए-वतन

फूलों का कुंज[1] दिलकश[2] भारत में इक बनायें
हुब्बे वतन के पौधे इस में नये लगायें
इक एक गुल में फूंके रुह-ए-शमीम-ए-वहदत[3]
इक इक कली को दिल के दामन से दें हवाएं
मुर्ग़ान-ए-बाग़ बन कर उड़ते फिरें हवा में
नग़मे हों रुह अफ्ज़ा और दिल रुबा[4] सदाएं
छाई हुई घटा हो मौसम तरब[5] फ़ज़ा हो
झोंके चले हवा के अशजार[6] लहलहायें
इस कुंज दिल नशीं में क़ब्ज़ा न हो रिवज़ों[7] का
जो हो गुलों का तख़्ता तख़्ता हो इक जिनाँ[8] का
बुलबुल को हो चमन में सय्याद का न खटका
खुश खुश हो शाख़े[9] गुल पर गम हो न आशियाँ का
मौसम हो जोश-ए-गुल का और दिन बहार के हों
आलम अजीब दिलकश हो अपने गुलसितां[10] का
मिल मिल के हम तराने हुब्बे वतन[11] के गायें
बुलबुल हैं जिस चमन के गीत उस चमन के गायें

1— झुण्ड 2— दिल को भाने वाला 3— बेमिसाल खुशबू, महक लुभाने वाली 4— दिल लुभाने वाली 5— खुशी बढ़ाने वाला 6— बहुत से पेड़ 7— पतझड़ 8— जन्नत 9— टहनी 10— बाग़ 11— देश प्रेम।

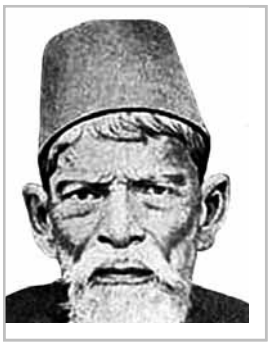

अकबर इलाहाबादी

जल्वा-ए-दरबार-ए-देहली

हम तो उनके ख़ैर-तलब[1] हैं
हम क्या ऐसे ही सब के सब हैं
उन के राज के उम्दा ढ़ब हैं
सब सामान-ए-ऐश-ओ-तरब[2] हैं

एग्ज़ीबीशन की शान अनोखी
हर शय[3] उम्दा हर शय चोखी
अक़्लीदस[4] की नापी जोखी
मन भर सोने की लागत सोखी

जश्न-ए-अज़ीम[5]-इस साल हुआ है
शाही फोर्ट मे बाल हुआ है
रौनक हर इक हॉल हुआ है
किस्सा-ए-माज़ी[6] हाल हुआ है

हॉल में चमकीं आ के यकायक
ज़रीं[7] थी पोशाक[8] झका झक
महक थी उन की औज-ए-समां[9] तक
चर्ख़[10] पे ज़ोहरा[11] उन की थी गाहक

1— भलाई चाहने वाला 2— आराम खुशी 3— चीज़ 4— गणित का ज्ञान 5— महोत्सव 6— भूतकाल, गुजरा हुआ 7— सुनहरी 8— कपड़ा, वस्त्र 9— आसमान तक ऊँचा 10— आसमान 11— सात सितारों का झूमर।

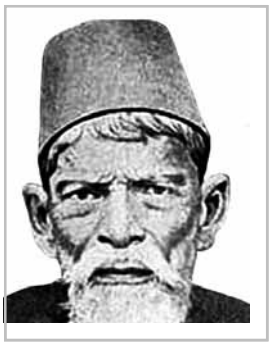

अकबर इलाहाबादी

कोराना अंग्रेज़ परस्ती

रहा वो जरगह[1] जिसे चर गयी हैं अंग्रेज़ी
सो वाँ खुदा की ज़रूरत न अंबिया[2] दरकार
वो आँख मींच के बर खुद गलत बने ऐसे
कि एशिया की हर इक चीज़ पर पड़ी धुत्कार
जो पोशिशों[3] में है पोशिश तो पसन्दीदा कोट
सवारियों में सवारी तो दुम कटा रहवार[4]
जो अर्दली में है कुत्ता तो हाथ में इक बेद
बजाते जाते हैं सीटी सुलग रहा है सिगार
वो अपने आप को समझ हुये हैं जेंटलमैन
और अपनी क़ौम के लोगों को जानते हैं गंवार
न कुछ अदब है न अख़्लाक़ नै खुदा तरसी[5]
गये हैं उनके खयालात अब समुंदर पार
वो अपने ज़ोम[6] में लिबरल[7] हैं या रीडीकल है
मगर हैं क़ौम के हक में ब सूरत-ए-अग्यार[8]
न इडिया में रहे वो न वो बने इंग्लिश
न उनको चर्च में ऑनर न मस्जिदों में बार
न कोई इल्म न सनअत[9] न कुछ हुनर न कमाल
तमाम कौम के सर पर सवार है अदबार[10]

1— गिरोह, जत्था 2— नबी, देवता 3— वस्त्र 4— घोड़ा 5— रहम दिली, ईशवर से डरना 6— अभिमान 7— आज़ाद ख़याल 8— ग़ैर, अजनबी 9— कारीगरी 10— बदनसीब।

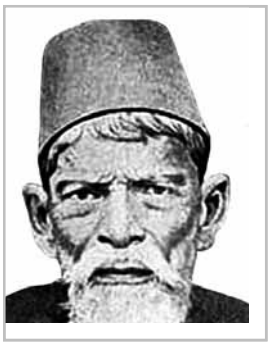

अकबर इलाहाबादी

वतन का राग

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है
हर रुत हर इक मौसम इस का कितना प्यारा प्यारा है
कैसा सुहाना कैसा सुन्दर प्यारा देस हमारा है
दुख में सुख में हर हालत में भारत दिल का सहारा है
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

मज़हब कुछ हो हिन्दी है हम सारे भाई भाई हैं
हिन्दू हैं या मुस्लिम हैं या सिख हैं या ईसाई हैं
प्रेम ने सब को एक किया है प्रेम के हम शैदाई[1] हैं
भारत नाम के आशिक हैं हम भारत के सौदाई[2] हैं
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

1— चाहने वाले 2— दीवाने।

डाक्टर सर मुहम्मद इक़बाल

तराना-ए-हिन्दी

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा

हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलसिताँ[1] हमारा

परवत है सबसे ऊँचा, हम्साया आसमाँ का

वह संतरी[2] हमारा, वह पासबाँ हमारा

गोदी में खेलती हैं इसकी हज़ारों नदियाँ

गुल्शन[3] है जिनके दम से रश्क-ए-जिनाँ[4] हमारा

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माँ[5] हमारा

1— बाग 2— पहरेदार 3— बाग़ 4— जन्नत 5— ज़माना।

डाक्टर सर मुहम्मद इक़बाल

शोआ-ए-उम्मीद

एक शोख किरन[1] शोख मिसाले निगह-ए-हूर
आराम से फ़ारिग सिफत-ए-जौहर-ए-सीमाब[2]
बोली कि मुझे रुखसते तनवीर[3] अता हो
जब तक न हो मशरिक[4] का हर इक ज़र्रह जहां ताब[5]
छोड़ूँगी न मैं हिन्द की तारीक[6] फ़जा[7] को
जब तक न उठें ख्वाब से मर्दान-ए-गिराँ[8] ख़्वाब[9]
ख़ावर[10] की उम्मीदों का यही ख़ाक है मरकज़[11]
इक़बाल के अश्कों[12] से यही खाक है सैराब[13]
चश्म[14]-ए-मह[15]-ओ-परवीं[16] है इसी खाक से रौशन
ये खाक कि है जिस का खज़फ रेज़ह[17] दुरेनाब[18]
इस खाक से उठे हैं वह ग़व्वास-ए-मआनी[19]
जिन के लिए हर बहर[20]-ए-पुरआशूब[21] है पायाब[22]
जिस साज[23] के नग़मों से हरारत थी दिलों में
महफिल का वही साज़ है बे गान-ए-मिज़राब[24]
बुतख़ाने के दरवाज़े पे सोता है ब्राहमन
तक़दीर को रोता है मुसलमाँ तह-ए-मेहराब[25]
मशरिक़ से हो बेज़ार[26] न मग़रिब से हजर[27] कर
फितरत का इशारह है कि हर शब[28] को सहर[29] कर

1— किरण 2— मरकरी, पारा 3— रोशनी प्रकाश 4— पूरब 5— दुनिया को प्रकाशित करने वाला, रौशन करने वाला (सूरज, चाँद इत्यादि) 6— अंधेरा 7— माहौल, ज़मीन व आसमान के मध्य की खाली जगह 8— मर्द, पुरष 9— ख़्वाब में डूबे हुए 10— सूरज, पूरब पश्चिम 11— केन्द्र बिन्दु 12— आँसू 13— फूला फला, उपजाऊ, पानी से भरा होना 14— आँख 15— चाँद 16— सात सितारों का झुरमुट 17— पत्थर, खजूर की गुठली 18— चमकदार 19— उच्चकोटि के साहित्यकार ऊँचे विचार वाले व्यक्ति, गोता खोर 20— समन्दर 21— आफत भर, फितना फसाद 22— कम गहरा 23— संगीत के सामान 24— साज बजाने का छल्ला 25— मेहराब के नीचे कयामनुमा ऊँची जगह 26— उकताना 27— ठहरना, सफर न करना 28— रात 29— सुबह।

डाक्टर सर मुहम्मद इक़बाल

नया शिवाला[1]

सच कह दूँ ऐ बरहमन गर तू बुरा न माने
तेरे सनम-कदों के बुत हो गए पुराने
अपनों से बैर रखना तू ने बुतों से सीखा
जंग-ओ-जदल सिखाया वाइज़[2] को भी ख़ुदा ने
तंग आ के मैंने ने आख़िर दैर[3]-ओ-हरम[4] को छोड़ा
वाइज़ का वाज़[5] छोड़ा छोड़े तेरे फ़साने
पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है
ख़ाक-ए-वतन[6] का मुझ को हर ज़र्रा देवता है
आ ग़ैरियत[7] के पर्दे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें नक्श-ए-दुई[8] मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवाला इस देश में बना दें
दुनिया के तीरथों से ऊँचा हो अपना तीरथ
दामान-ए-आसमाँ से इस का कलस[9] मिला दें
हर सुबह उठ के गाएँ मंतर वो मीठे मीठे
सारे पुजारियों को मय[10] प्रीत[11] की पिला दें
शक्ति भी शंति भी भगतों के गीत में है
धरती के बासियों की मुक्ति,[12] प्रीत में है

1— मंदिर 2— शिक्षक, धर्म पर भाषण देने वाला, नसीहत करने वाला, 3— मन्दिर 4— काबा, पवित्र जगह, इस्लामिक केंद्र 5— धार्मिक प्रवचन 6. देश की मिट्टी 7— अजनबीपन 8— दो समझना अलग समझने वाला, दृष्टिकोण 9— गुम्बद 10— शराब 11— प्रेम, प्यार 12— आज़ादी, छुटकारा।

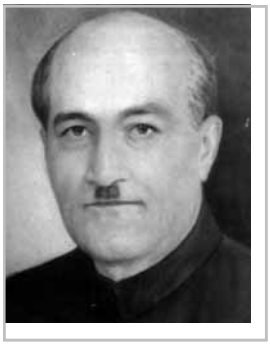

'जोश' मलीहाबादी

शिकस्त-ए-ज़िन्दाँ का ख़्वाब

क्या हिन्द का जिन्दाँ[1] कांप रहा है गूंज रही हैं तकबीरें
उक्ताए हैं शायद कुछ क़ैदी और तोड़ रहे हैं ज़नजीरे

दीवारों के नीचे आ आ कर यूँ जमा हुआ हैं ज़िन्दानी[2]
सीनों में तलातुम[3] बिजली का आंखों में झलकती शमशीरें[4]

भूकों की नज़र में बिजली है तोपों के दहाने ठण्डे हैं
तक़दीर के लब को जुम्बिश[5] है दम तोड़ रही हैं तदबीरें

आंखों में गदा की सुर्ख़ी है बेनूर है चेहरा सुल्तां का
तख़रीब[6] ने परचम[7] खोला है सजदे में पड़ी हैं तामीरें[8]

क्या उनको ख़बर थी ज़ेर-ओ-ज़बर[9] रखते थे जो रुहे मिल्लत को
उबलेंगे ज़मीं से मार-ए-सियह[10] बरसेंगी फ़लक[11] से शमशीरें

क्या उनको खबर थी सीनों से जो खून चुराया करते थे
इक रोज़ इसी बेरंगी से झलकेंगी हज़ारो तस्वीरें

क्या उनको ख़बर थी, होंठो पर जो कुफ्ल[12] लगाया करते थे
इक रोज़ इसी खामोशी से टपकेंगी दहकती तक़रीरें

सम्भलों कि वह ज़िन्दाँ गूंज उठा, झपटो कि वह क़ैदी छूट गये
उठो कि वह बैठी दीवारें, दौड़ो कि वह टूटी ज़नजीरे

1— क़ैदखाना, कारागार 2— कैदी 3— तूफान 4— तलवारें 5— हिलना डुलना 6— तबाही, उजाड़ना 7— झण्डा 8— घर इमारत 9— उलट पलट 10— काला साँप 11— आसमान 12— ताला।

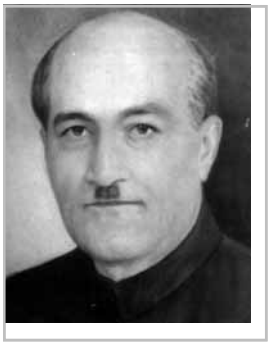

'जोश' मलीहाबादी

वतन

ऐ वतन, पाक वतन रुह-ए-रवान-ए-एहरार[1]
ऐ कि ज़र्रों में तेरे बू-ए-चमन रंग-ए-बहार
ऐ कि ख्वाबीदा[2] तेरी ख़ाक में शाहाना वक़ार[3]
ऐ कि हर ख़ार[4] तेरा रुकश[5]-ए-सदरु[6]-ए-निगार[7]
रेज़े अल्मास[8] के तेरे ख़स[9]-ओ-ख़ाशाक[10] में हैं
हड्डियाँ अपने बुजुर्गों की तेरी ख़ाक में है।
पायी गुन्चों[11] में तेरे रंग की दुनिया हमने
तेरे काँटों से लिया दर्स-ए-तमन्ना हमने
तेरे क़तरों से सुनी क़िरात-ए-दरिया हमने
तेरे ज़र्रों में पढ़ी आयत-ए-सहरा हमने
क्या बतायें कि तेरी बज़्म में क्या क्या देखा
एक एक आसू में दुनिया का तमाशा देखा
पहले जिस चीज़ को देखा, वो फ़ज़ा तेरी थी
पहले जो कान में आई वो सदा तेरी थी
पालना जिसने हिलाया वो हवा तेरी थी
जिसने गहवारे[12] में चूमा वो सबा[13] तेरी थी
अव्वलीं[14] रक़्स[15] हुआ मस्त घटा में तेरी
भीगी है अपनी मसें[16] आब-ओ-हवा में तेरी

1— आजाद लोग 2— सोया हुआ 3— बडप्पन, भारी भरकम कद्र वाला 4— कांटा 5— मुकाबिल 6— सौ चेहरे 7— मूरत, सुन्दर मोहने वाला 8— हीरा 9— सूखी घास 10— कूड़ा करकट 11— कली 12— झूला 13— हवा 14— प्रथम बार 15— नाचना 16— रोयें, त्वचा के बाल।

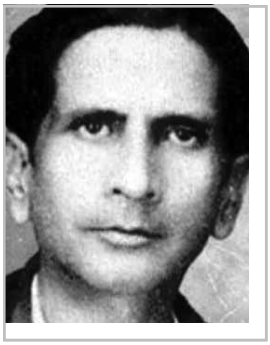

असरारुल हक़ 'मजाज़'

जश्न-ए-आज़ादी

ब-सद[1] ग़ुरूर ब-सद फ़ख्र-ओ-नाज़-ए-आज़ाद[2]
मचल के खुल गई ज़ुल्फ़ -ए-दराज़-ए-आज़ादी[3]
मह-ओ-नुजूम[4] हैं नग़मा-तराज़-ए-आज़ादी[5]
वतन ने छेड़ा है इस तरह साज़-ए-आज़ादी[6]
ज़माना रक़्स[7] में है ज़िंदगी ग़ज़ल-ख़्वाँ है

हर इक जबीं[8] पे है इक मौज-ए-नूर-ए-आज़ादी[9]
हर इक आँख में कैफ़ -ओ-सुरूर-ए-आज़ादी[10]
ग़ुलामी ख़ाक-बसर[11] है हुज़ूर-ए-आज़ादी[12]
हर एक क़स्र[13] है इक बाम-ए-तूर-ए-आज़ादी[14]
हर एक बाम पे इक परचम-ए-ज़र-अफ़्शाँ[15] है

हर एक सम्त निगारान-ए-यासमीं-पैकर[16]
निकल पड़े हैं दर-ओ-बाम से मह-ओ-अख़्तर[17]
वो सैल-ए-नूर[18] है ख़ीरा[19] है आदमी की नज़र
ब-सद ग़ुरूर-ओ-अदा ख़ंदा-ज़न[20] है गर्दूं[21] पर
ज़मीन-ए-हिन्द कि जोला-निगह ग़ज़ालाँ[22] है

सदा दो अंजुम-ए-अफ़्लाक[23] रक़्स फ़रमाएँ
बुतान-ए-काफ़िर-ओ-सफ़्फ़ाक[24] रक़्स फ़रमाएँ
शरीक हल्का-ए-इदराक[25] रक़्स फ़रमाएँ
तरब[26] का वक़्त है बेबाक रक़्स फ़रमाएँ
कि ये बहार-ए-पयामी-ए-सद-बहाराँ है

ये इंक़लाब का मुज़्दा[27] है इंक़लाब नहीं
ये आफ़्ताब का परतव[28] है आफ़्ताब नहीं
वो जिस की ताब-ओ-तवानाई[29] का जवाब नहीं
अभी वो सइ-ए-जुनूँ-ख़ेज़[30] कामयाब नहीं
ये इंतिहा नहीं आग़ाज़-ए-कार-ए-मर्दां है

1— सैंकड़ों 2— आजादी का गर्व 3— आज़ादी की लम्बी लटें 4— चाँद तारे 5— आज़ादी के गीत गाते हुए 6— आज़ादी का वाद्य 7— नृत्य 8— माथा 9— आज़ादी के प्रवाह की मौज 10— आज़ादी का नशा 11— धूलधुसरित 12— आज़ादी को चरणों में 13— महल 14— आज़ादी के तूर की छत 15— सोना बिखेरता हुआ 16— चमेली जैसे आकार की मूर्तियाँ 17— चाँद सितारे 18— प्रकाश की बाड़ 19— चकाचौंध 20— मुस्कुराता हुआ 21— आकाश 22— हिरनों के दौड़ने का मैदान 23— आकाश के तारे 24— बातिल और काफिर 25— ज्ञान, गोष्ठी के शरीक 26— आनन्द 27— खुशख़बरी 28— किरण, रोशनी 29— धैर्य, धीरज 30— जुनून पैदा करने वाली कोशिश।

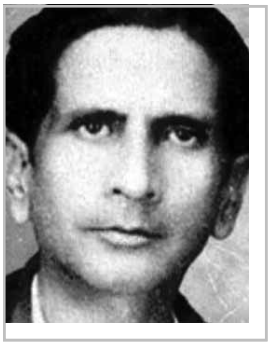

असरारुल हक़ 'मजाज़'

इंक़लाब[1]

छोड़ दे मुतरिब[2] बस अब लिल्लाह पीछा छोड़ दे
काम का ये वक़्त है कुछ काम करने दे मुझे
तेरी तानों में है ज़ालिम किस क़यामत का असर
बिजलियाँ सी गिर रही हैं ख़िर्मन[3]-ए-इदराक[4] में
ये ख़याल आता है रह रह कर दिल-ए बेताब में
बह न जाऊँ फिर तेरे नग़मात[5] के सैलाब[6] में
छोड़ कर आया हूँ किस मुश्किल से मैं जाम-ओ-सुबू![7]
आह किस दिल से किया है मैने ख़ून-ए-आरज़ू
फिर शबिस्तान-ए-तरब[8] की राह दिखलाता है तू
मुझ को करना चाहता है फिर ख़राब-ए-रंग-ओ-बू
मैने माना वज्द[9] में दुनिया को ला सकता है तू
मैंने माना तेरी मौसीक़ी[10] है इतनी पुर-असर
झूम उठते हैं फ़रिश्ते तक तेरे नग़मात पर
हाँ ये सच है ज़मज़मे[11] तेरे मचाते हैं वो धूम
झूम जाते हैं मनाज़िर[12] रक़्स[13] करते है नजूम[14]
तेरे ही नग़मे से वाबस्ता[15] निशात-ए-ज़िन्दगी[16]
तेरे ही नग़मे से कैफ़-ओ-इन्बिसात-ए-ज़िन्दगी[17]
तेरी सौत-ए-सरमदी[18] बाग़-ए-तसव्वुफ़[19] की बहार
तेरे ही नग़मों से बेख़ुद आबिद-ए-शब-ज़िन्दा-दार[20]
बुलबुलें नग़मा सरा हैं तेरी ही तक़लीद[21] में
तेरे ही नग़मों से झूमें महाफ़िल-ए-नाहीद[22] में
मुझ को तेरे सहर-ए-मौसीक़ी से कब इंकार है
मुझ को तेरे लहन-ए-दाऊदी[23] से कब इंकार है
बज़्म हस्ती का मगर क्या रंग है ये भी तो देख
हर ज़बाँ पर अब सला-ए-जंग[24] है ये भी तो देख
फ़र्श-ए-गीती[25] से सुकूँ अब मायल-ए-परवाज़[26] है
अब्र[27] के पर्दों में साज़-ए-जंग की आवाज़ है
फेंक दे ऐ दोस्त अब भी फ़ेक दे अपना रूबाब[28]
उठने ही वाला है कोई दम में शोर-ए-इंक़लाब

1— क्रान्ति 2— गाने वाल, कव्वाल 3— खलिहान 4— अक़्ल 5— गीत 4— बाढ़ 7— शराब के बर्तन, सुराही, प्याला इत्यादि 8— खुशी 9— झूमना 10— संगीत 11— गीत, तराना, सुरीली आवाज़ 12— दृश्य 13— नाचना 14— सितारे 15— जुड़ना 16— खुशी की ज़िन्दगी 17— खुशी की जिन्दगी 18— आवाज़, इलाही 19— सूफी खयाल 20— रात को जागकर प्रार्थना करने वाले 21— नकल 22— सितारा 23— दाउद पैगम्बर की संगीतमय आवाज़ प्रसिद्ध थी, आकर्षित करने वाली आवाज 24— आहवान करना, दावत.ए.आम(जंग की) 25— ज़मीन 26— उड़ना 27— बादल 28— बाजा।

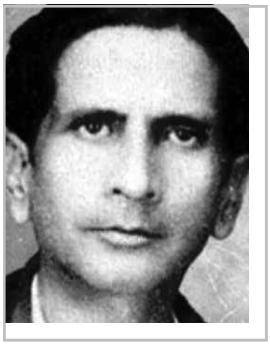

असरारुल हक़ 'मजाज़'

आवारा

शहर की रात और मैं नाशाद[1]-ओ-नाकारा फिरुँ
जगमगाती जागती सड़कों पे आवारा फिरुँ
गैर की बस्ती है कब तक दर-ब-दर मारा फिरुँ
ऐ ग़म-ए-दिल[2] क्या करुँ, ऐ वहशत-ए-दिल[3] क्या करुँ
इक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब[4]
जैसे मुल्ला का अमामा जैसे बनिये की किताब
जैसे मुफलिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब[5]
ऐ-ग़म-ए-दिल क्या करुँ, ऐ वहशत-ए-दिल क्या करुँ
जी में आता है ये मुर्दा चाँद तारे नोच लूँ
इस किनारे नोच लूँ और उस किनारे नोच लूँ
एक दो का ज़िक्र क्या सारे के सारे नोच लूँ
ऐ ग़म-ए-दिल क्या करुँ, ऐ वहशत-ए-दिल क्या करुँ
मुफ़लिसी और ये मज़ाहिर[6] हैं नज़र के सामने
सैकड़ों सुल्तान-ओ-जाबिर[7] हैं नज़र के सामने
सैकड़ों चंगेज़-ओ-नादिर हैं नज़र के सामने
ऐ ग़म-ए-दिल क्या करुँ, ऐ वहशत-ए-दिल क्या करुँ
ले के इक चंग़ेज़ के हाथों से खंजर[8] तोड़ दूँ
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूँ
कोई तोड़े या न तोड़े मैं ही बढ़ कर तोड़ दूँ
ऐ ग़म-ए-दिल क्या करुँ, ऐ वहशत-ए-दिल क्या करुँ

1— अप्रसन्न 2— दिल का ग़म 3— घबराहट 4— चाँद 5— जवानी 6— दृश्य, नजारे 7— जुल्म करने वाला, जबरदस्ती करने वाल 8— तलवार।

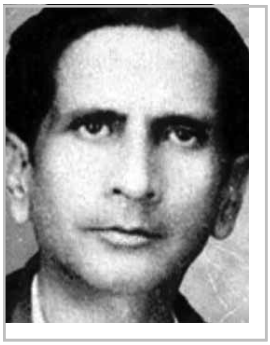

असरारुल हक 'मजाज'

बोल! अरी ओ धरती बोल

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

बादल बिजली रैन अंधियारी — दुख की मारी प्रजा सारी
बूढ़े बच्चे सब दुखिया हैं — दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती बस्ती लूट मची है — सब बनिये हैं सब व्यापारी

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

कलजुग में जग के रख़वाले — चाँदी वाले सोने वाले
देसी हों या परदेसी हों — नीले पीले गोरे काले
मक्खी भुन्गे भिन भिन करते — ढूँढ़े हैं मकड़ी के जाले

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

क्या अफरंगी क्या तातारी — आँख बची और बर्छी मारी
कब तक जनता की बेचैनी — कब तक जनता की बेज़ारी[1]
कब तक सरमाया[2] के धँधे — कब तक ये सरमायादारी[3]

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

नामी और मशहूर नहीं हम — लेकिन क्या मज़दूर नहीं हम
धोखा और मज़दूरों को दें — ऐसे तो मजबूर नहीं हम
मंज़िल अपने पाँव के नीचे — मंज़िल से अब दूर नहीं हम

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

बोल कि तेरी खिदमत की है — बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाए हैं — बोल कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हश्र[4] उठाया — बोल कि हमने हश्र उठा है

बोल कि हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती

बोल! अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डाँवा डोल

1— उक्ताहट 2— धन दौलत 3— धनी लोग 4— आफत, प्रलय हलचल।

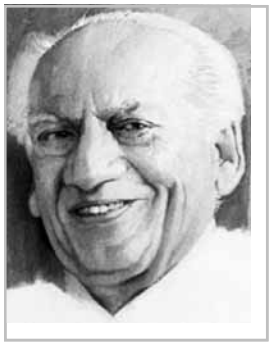

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

सुब्ह-ए-आज़ादी

ये दाग़ दाग़ उजाला ये शब गज़ीदह[1] सहर[2]
वह इन्तज़ार था जिस का ये वह सहर तो नहीं
ये वह सहर तो नहीं जिसकी आरज़ू लेकर
चले थे यार कि मिल जायेगी कहीं न कहीं
फलक के दश्त[3] में तारों की आख़िरी मंज़िल
कहीं तो होगा शबे सुस्त मौज का साहिल[4]
कहीं तो जाके रुकेगा सफीना-ए-ग़म-ए-दिल[5]
जवां लहू की पुर असरार[6] शाहराहों[7] से
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पड़े
दयारे हुस्न की बेसब्र ख़्वाब गाहों[8] से
पुकारती रहीं बाहें बदन बुलाते रहे
बहुत अज़ीज़ थी लेकिन रुख़े सहर की लगन
बहुत क़रीं[9] था हसीनान-ए-नूर का दामन
सुबुक सुबुक थी तमन्ना दबी दबी थी थकन
सुना है हो भी चुका है फिराक़[10]-ए-जुल्मत[11]-ओ-नूर[12]
सुना है हो भी चुका है विसाल[13]-ए-मंज़िल-ओ-गाम[14]
बदल चुका है बहुत अहल-ए-दर्द का दस्तूर[15]
निशत-ए-वस्ल[16] हलाल-ओ-अज़ाब-ए-हिज्र हराम
जिगर की आग नज़र की उमंग दिल की जलन
किसी पे चारा-ए-हिजरां का कुछ असर ही नहीं
कहां से आई निगार-ए-सबा, किधर को गयी
अभी चिराग़-ए-सर-ए-रह[17] को कुछ ख़बर ही नहीं
अभी गिरानी-ए-शब[18] में कमी नहीं आई
नजात[19]-ए-दीद-ओ-दिल की घड़ी नहीं आई
चले चलो कि वह मंज़िल अभी नहीं आई

1— चुभने वाली रात 2— सुबह 3— जंगल 4— किनारा 5— ग़म भरे दिल की कश्ती 6— भेद 7— चौड़े रास्ते 8— सोने का कमरा 9— करीब 10— जुदाई 11— अंधेरा 12— रौशनी 13— मुलाक़ात 14— कदम 15— रवाज 16— जुदाई 17— रास्ते का चराग़ 18— तकलीफ की रात 19— छुटकारा।

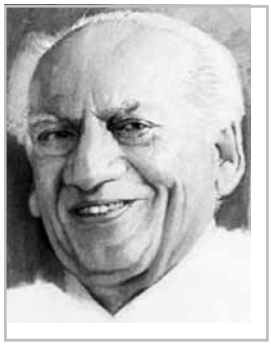

फ़ै ज़ अहमद फ़ैज़

हम जो तारीक राहों में मारे गये

तेरे होंठो के फूलों की चाहत में हम
दार[1] की ख़ुश्क[2] टहनी पे वारे गये
तेरे हाथों की शम्ओं[3] की हसरत में हम
नीम-तारीक[4] राहों में मारे गये
सूलियों पर हमारे लबों से परे
तेरे होंठो की लाली लपकती रही
तेरी ज़ुल्फ़ों की मस्ती बरसती रही
तेरे हाथों की चांदी दमकती रही
जब खुली तेरी राहों में शाम-ए-सितम
हम चले आये लाये जहां तक क़दम
लब पे हर्फ़े गज़ल दिल में क़न्दीले[5] ग़म
अपना ग़म था गवाही तेरे हुस्न की
देख कायम रहे इस गवाही पे हम
हम जो तारीक राहों पे मारे गये
ना-रसाई[6] अगर अपनी तक़दीर थी
तेरी उल्फ़त[7] तो अपनी ही तदबीर थी
किसको शिक़वा है गर शौक़ के सिलसिले
हिज्र[8] की क़त्ल गाहों से सब जा मिले
क़त्ल गाहों से चुनकर हमारे अलम
और निकलेंगे उश्शाक़[9] के क़ाफ़िले[10]
जिनकी राहे तलब से हमारे क़दम
मुख़्तसर[11] कर चले दर्द के फ़ासले
कर चले जिन की ख़ातिर जहाँगीर[12] हम
जाँ गँवा कर तेरी दिलबरी का भरम
हम जो तारीक राहों में मारे गये

1— सूली 2— सूखी 3— चराग़ 4— अंधेरा 5— शीशे का लैम्प, लालटेन शीशे का बर्तन जिसमें बत्ती जला देते हैं 6— असफलता, नाकामी 7— मुहब्बत, प्रेम 8— जुदाई 9— प्रेमी 10— कारवाँ 11— संक्षेप 12— दुनिया को कब्ज़े में करना।

मख़दूम मुहिउद्दीन

जंग-ए-आज़ादी

ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आज़ादी के परचम[1] के तले
हम हिन्द के रहने वालों की
महक़ूमों[2] की मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की
दहक़ानों[3] की मज़दूरों की
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले
वह जंग ही क्या वह अमन ही क्या
दुश्मन जिस में ताराज[4] न हो
वह दुनिया दुनिया क्या होगी
जिस दुनिया मे स्वराज[5] न हो
वह आज़ादी आज़ादी क्या
मज़दूर का जिसमें राज न हो
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी[6]
आज़ादी के परचम के तले

1— झण्डा 2— दास, गुलाम 3— किसानों 4— बर्बाद 5— आज़ाद हुकूमत 6— आज़ादी की लड़ाई।

गुलाम रब्बानी ताबाँ

इंतक़ाम[9]

मैं किस से इंतक़ाम लूँ?
यह सच है बेकसों[2] के खून से सुर्ख़ हो गयी ज़मीं
मुसीबतों की दास्ताँ मैं सुन चुका हूँ हमनशीं[3]
मैं सुन चुका हूँ किस तरह बुजुर्ग-व-नातवान[4] भी
बिलकते शीर ख़्वार[5] भी फसुरदा[6] नौजवान भी
अज़ल[7] के घाट एक एक करके सब उतर गये
घरों की शाहज़ादियाँ हरीम-ए-नाज़ की मकीं[8]
जो इफ़्फ़तें[9] गँवा चुकीं जो अस्मतें[10] लुटा चुकीं
भटक रही हैं दर-ब-दर बरहना[11] पा[12] बरहना सर
मैं सुन चुका हूँ हम नशीं दास्तान-ए-दिलखराश[13]
मगर किसे मैं दोष दूँ मैं किससे इंतक़ाम लूँ
तबाहियों की गोद से पले हुए किसान से?
कि जंग-ए-इंकलाब के सिपाही नौजवान से ग़रीब-व-नातवान से
इन्हें नहीं यह सब मेरे अज़ीज़ हैं यह सब मुझे अज़ीज़ हैं
मैं किससे इंतकाम लूँ, बता किसे मैं दोष दूँ
चमन में किसने आग दी है मौसम-ए-बहार में
एक अजनबी सफेद हाथ आतिश और शोला बार
फ़ज़ा-ए-तीर-ए-वतन में रक़स[14] कर रहा है आज।

1— बदला 2— बेबस, मजबूर 3— दोस्त, साथ बैठने वाला 4— कमज़ोर 5— दूध पीता बच्चा 6— उदास 7— मौत 8— महबूब का घर या दोस्त का घर 9, 10— इज़्ज़त 11— नंगापन 12— पैर 13— दिल चीरने वाला, दर्दनाक 14— नाच।

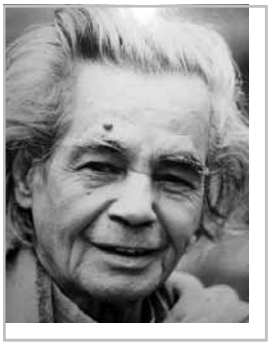

अली सरदार जाफ़री

एशिया जाग उठा

एशिया की ख़ाक पर दम तोड़ता है सामराज[1]
एशिया की ठोकरों में है मलूकियत[2] का ताज
एशिया में एशिया का जश्न-ए-आज़ादी है आज
एशिया के ख़ून में है सुबह मशरिक़[3] का रचाव
एशिया से भाग जाओ
अब से होगा एशिया पर एशिया वालों का राज
दस्त-ए-मेहनत को मिलेगा दस्त-ए-मेहनत से ख़िराज[4]
ज़िन्दगी बदली है बदला है ज़माने का मिज़ाज
फोड़ देंगे हम यह आँखें हम को मत आँखें दिखाओ
एशिया से भाग जाओ
लुट गये वह दिन कि जब आक़ा थे तुम और हम ग़ुलाम
हम वह बेहिस थे कि तुम को झुक के करते थे सलाम
आज हम हैं बद-दिमाग़-ओ-बद-ज़बान-ओ-बद-लगाम
सेर का बदला है सेर और पाव का बदला है पाव
एशिया से भाग जाओ
हम ने देखे हैं बहुत जुल्म-ओ-सितम क़हर-ओ-अताब
नोच लेंगे हम तुम्हारी सल्तनत का आफ़ताब
हम भी देंगे तुम को अब जूते से जूते का जवाब
हाँ बड़े आये कहीं के लाट साहब जाओ जाओ
एशिया से भाग जाओ

1— शहंशाहियत 2— बादशाहत 3— पूरब 4— श्रद्धान्जलि।

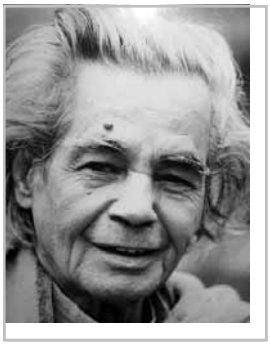

अली सरदार जाफ़री

इरतेक़ा[1] और इंक़लाब

रक़्स[2] कर ऐ रुह-ए-आज़ादी कि रक़्साँ[3] है हयात
घूमती है वक़्त के महवर[4] पे सारी कायनात[5]

उड़ रहा है जुल्म-व-इस्तेबदाद[6] के चेहरे से रंग
छट रहा है वक़्त की तलवार के माथे से जंग

हिल चुका है तख़्त शाही गिर चला है सर से ताज
हर कदम पर डगमगाया जा रहा है साम्राज्य

ढल रही है ज़रगिरी[7] की रात के तारों की छाँव
मुफ़लिसी[8] फैला रही है वक़्त की चादर में पाँव

1— तरक्की 2— नाच 3— नाचना 4— धुरी 5— दुनिया 6— जुल्म 7— जाल, फरेब धोखाधड़ी 8— गरीबी।

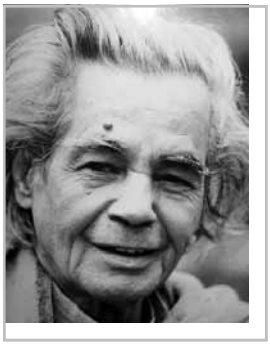

अली सरदार जाफ़री

यह हिन्दोस्ताँ

यह हिन्दोस्ताँ रश्क़े खुल्द-ए-बरीं[1]
उगलती है सोना वतन की ज़मीं
कहीं कोयले और लोहे की कान[2]
कहीं सुर्ख़ पत्थर की उँची चटान
कहीं संगमरमर की शफ़्फ़ाफ[3] सिल[4]
फिसलता है जिसकी सफाई पे दिल
बहुत से ख़ज़ीने[5] हैं इस ख़ाक[6] में
हज़ारों दफ़ीने[7] हैं इस ख़ाक में
गुलो लाल-ओ-यासमीं[8] के अयाग[9]
महकते हुये आम के सब्ज़ बाग़
हरे और भरे जंगलों की बहार
झलाझल चमकते हुये रेग ज़ार[10]
ये सूरज की रंगीन किरनों का जाल
कि जिस तरह फ़ितरत ने खोले हों बाल
उफ़ुक़ [11] से उबलता हुआ रंग-ओ-नूर
फजाओं में परवाज़ करते तयूर[12]
ये नीलम और अलमास[13] के कोहसार[14]
ये चांदी के पिघले हुये आबशार[15]
ये गंगा का आँचल ये जमुना की रेत
ये धान और गेहूँ के शादाब[16] खेत
मगर ये खज़ाने हमारे नहीं
हमारे नहीं हैं तुम्हारे नहीं

1— स्वर्ग भी जिस पर गर्व करे 2— खान 3— साफ 4— पत्थर 5— ख़ज़ाना 6— मिट्टी 7— दफ़्न किए हुए 8— लाला व चमेली के फूल 9— प्याला 10— रेगिस्तान 11— आसमान का किनारा जो ज़मीन से मिला दिखाई देता है 12— पंक्षी (बहुत से) 13— हीरा 14— पर्वतमाला 15— झरना 16— हरा-भरा।

क़ाज़ी सलीम

मेरे आज़ाद वतन

मेरे आज़ाद वतन मेरी उम्मीदों के चमन[1]
तू मेरा ख़्वाब है और ख़्वाब की ताबीर[2] भी है
आज ऐ जाने जहाँ तूने पुकारा है मुझे
तेरी आवाज़ में जादू भी है तासीर भी है
तेरी ललकार पे सब फर्क़ मिटे एक हुए
यह सियह रात नयी सुबह की तनवीर[3] भी है
हो मुबारक तुझे मन्ज़िल का तसव्वुर[4] तो मिला
वह तसव्वुर जो चराग-ए-रहे-तामीर[5] भी है
सर उठाया है जो बातिल[6] ने हमेशा की तरह
हकपरसती में वह क़ूव्वत-ए-तसख़ीर[7] भी है
हम वह दिल वाले हैं करते हैं जो ताज़ीम-ए-वफ़ा[8]
दोस्ती जिनके लिए दोस्त की तौक़ीर[9] भी है
जिसने तोड़े हैं मुहब्बत की शरीअत[10] के उसूल
वह गुनहगार भी हैं क़ाबिल-ए-ताज़ीर[11] भी है
इस ख़ताकार[12] से कह दो कि अगर वक़्त पड़े
बासुरी कृष्ण की अर्जुन का कड़ा तीर भी है

1— बाग़ 2— ख्वाब(सपना) की व्याख्या 3— प्रकाश 4— कल्पना 5— निर्माण मार्ग का चराग़ 6— झूठ 7— जीतना 8— साथ देना 9— इज़्ज़त 10— कानून 11— दण्ड देने योग्य 12— गुनहगार।

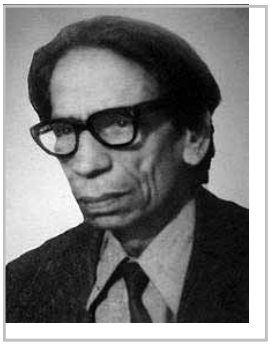

शमीम करहानी

दौलत-ए-सीमीं[1]

नज़र नज़र को मुबारक हो यह अज़ीम सहर
जो जुल्मतों[2] के क़फ़स[3] से गुजर के आई है
किरन किरन पे है मुहरे-तबस्सुमे-अबदी[4]
कि मक़्तले[5]-शोहदा से निकल के आई है
सियाह ख़ान-ए-जम्हूरे-वक़्त[6] की क़न्दील
फराज़े-दारो-रसन[7] से उतर के आई है

सहर के नाम से दिल जिसको याद करता है
वह जामे-सुर्ख़ है रिन्दाने-तिश्ना लब[8] के लिए
बराए-चेहरा-ए-आलम[9] है बोस-ए-इख़्लास[10]
जो हर्फे-नर्म है बीमारे नीमशब[11] के लिए

1— चाँदी की दौलत 2— अंधेरा 3— पिंजरा 4— अनन्तकाल की मुसकुराहट की अंत 5— बधस्थल 6— वक़्त के जम्हूर का घेरा, घर 7— फाँसी की रस्सी की ऊँचाई 8— प्यासे लब 9— संसार के चेहरे के लिए 10— निष्ठा का चुम्बन 11— आधी रात का।

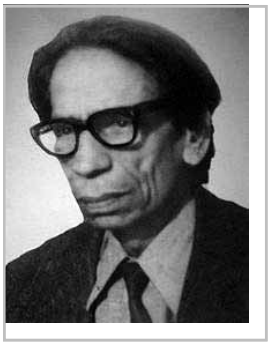

शमीम करहानी

जवान जज़्बे

यह ज़ुल्म शहंशाही जिस वक़्त मिटा देंगे
सोती हुई दुनिया की क़िस्मत को जगा देंगे

इफ़्लास[1] के सीने से शोले जो लपकते हैं
महलों में अमीरों के वह आग लगा देंगे

हैं आज बग़ावत पर तैयार जवाँ जज़्बे[2]
जल्लाद हुकूमत की बुनियाद हिला देंगे

यूँ फूल खिलायेंगे टपका के लहू अपना
ग़ुरबत के बयाबाँ[3] को गुलज़ार[4] बना देंगे

हम परचम-ए-क़ौमी को लहरा के हिमालय पर
दुश्मन की हुकूमत के झण्डे को झुका देंगे

जो आड़ में मज़हब के हंगामा करें बरपा
हम ऐसे फसादी को गंगा में बहा देंगे

सर जाये कि जाँ जाये ऐ मादर-ए-हिन्द[5] इक दिन
ज़िल्लत से ग़ुलामी की हम तुझको छुड़ा देंगे

किस तरह संवरता है सर देने से मुस्तक़बिल[6]
गैरों को बता देंगे अपनों का सिखा देंगे

1— गरीबी 2— भावनाएं 3— वीराना, जंगल 4— बाग 5— भारत माता 6— भविष्य।

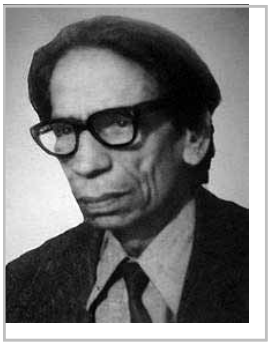

शमीम किरहानी

रौशन अंधेरा

था ज़बानों पे ये नारा आशियाँ[1] को छोड़ दो
छोड़ दो ऐ गासिबो[2] हिन्दोस्ताँ को छोड़ दो
इस सदा ने चोट पहुंचायी सितम के नाज़ पर
छा गयीं तोपें गरज कर दर्द की आवाज़ पर
मौत का परचम फ़ज़ा[3] के दोश[4] पर लहरा गया
जिन्दगी के सहन[5] में गम का अंधेरा छा गया
इस अंधेरे में घरों की रौशनी लूटी गई
मौत ने खुशियाँ मनायी जिंदगी लूटी गई
था वतन आफ़त में यारान-ए-चमन देखा किये
आशियां लुटता रहा अहल-ए-चमन देखा किये
बेख़बर कहते थे ग़म की ताब क्या लाओगे तुम
आग वह दहकी है जल कर ख़ाक[6] हो जाओगे तुम
उनसे कह दो बात वह जिन की हवा मे खो गई
तप के सोना बन गये हम आग ठण्डी हो गई

1— घोंसला 2— लुटेरों 3— माहौल, खुला मैदान, बहार 4— कांधा 5— आंगन, अहाता 6— मिट्टी।

सिराज लखनवी

यौम-ए-आज़ादी[1]

ज़मीन-ए-हिन्द है और आसमान-ए-आज़ादी
यक़ीन बन गया अब तो गुमान-ए-आज़ादी
सुनो बुलन्द हुई फिर अज़ान-ए-आज़ादी
सर-ए-नियाज़[2] है और आस्तान-ए-आज़ादी[3]
पहाड़ फट गया और नूर-ए-सहर[4] से रात मिली
ख़ुदा का शुक्र ग़ुलामी से तो नजात[5] मिली
हवा-ए-ऐश-ओ-तरब[6] बादबान बन के चली
ज़मी वतन की नया आसमान बन के चली
नसीम-ए-सुबह[7] फिर अर्जुन का बान बन के चली
बहार-ए-हिन्द तिरंगा निशान बन के चली

1— आज़ादी का दिन 2— श्रद्धापूर्ण ललाट 3— आज़ादी की चौखट 4— प्रात:काल का प्रकाश 5— मुक्ति 6— सुख और ऐशवर्य की हवा 7— प्रात: समीर।

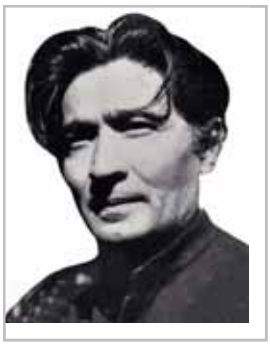

जाँनिसार अख्तर

बादा-ए-वतन

पिला साक़िया[1]। बादा-ए-खाना साज़[2]
कि हिन्दोस्ताँ पर रहे हम को नाज़
मुहब्बत है खाके वतन से हमें
मुहब्बत है अपने चमन से हमें
हमें अपनी सुब्हों से शामों से प्यार
हमें अपने शहरों के नामों से प्यार
हमें प्यार अपने हर इक गाँव से
घने बरगदों की घनी छाँव से
हमे प्यार अपनी इमारात से
हमें प्यार अपनी रिवायात[3] से
हमें प्यार है अपनी तमीज़ से
हमें प्यार है अपनी हर चीज़ से
उठाये जो कोई नज़र क्या मजाल
तेरे रिन्द[4] लें बढ़के आँख़े निकाल

1— शराब पिलाने वाला 2— घर की बनी शराब 3— संस्कार, रस्म-ओ-रिवाज 4— शराबी, बेदीन।

निहाल सेवहारवी

वतन

सुरुर[1]-ए-दीदा-ओ-दिल आलमे दयार-ए-वतन
हज़ार ख़ुल्द[2] दर आग़ोश[3] है बहार-ए-वतन

वतन का जब लबे शायर पे नाम होता है
तो इक हदीस-ए-मोहब्बत कलाम होता है

फ़ज़ाए दिल से वफाओं के राग उठते हैं
तमाम इश्क के जज़्बात जाग उठते हैं

अगर जहाँ में मज़ाके हयात पस्त नहीं
वो आदमी ही नहीं जो वतन परस्त[4] नहीं

वतन की सर-ओ-समन[5] की अदाऐं क्या कहना
वतन के बाग वतन की हवाऐं क्या कहना

हर एक हुस्न सरापा अरे मआज़ अल्लाह
वतन के चश्मा-ओ-दरिया[7] अरे मआज़ अल्लाह[6]

वतन का रूप है हर ऐक ला कलाम अज़ीज़
वतन की सुब्ह है दिलकश[8] वतन की शाम अज़ीज़

अज़ीज़ अपने वतन की हैं चाँदनी रातें
पसन्द अपने चमन की हैं चादनी रातें

1— नशा 2— स्वर्ग 3— गोद 4— देश का वफादार 5— मोरपंखी, चमेली 6— अल्लाह की पनाह 7— पानी का सोता, दरिया 8— दिल को भाने वाला।

गोपाल मित्तल

ऐ वतन

सलाम हो तेरी गलियों पे ऐ वतन के जहाँ
ये रस्म आम है, जो चाहे सर उठा के चले
कोई भी शर्त बजुज़ वज़-ए-एहतियात[1] नहीं
कोई संभल के चले कोई लड़खड़ा के चले

सलाम हो तेरी गलियो पे ऐ वतन के जहाँ
मेरे जुनून की पादाश[2] संग[3]-ओ-खिश्त[4] नहीं
जहाँ पे दाना-ए-गन्दुम[5] नहीं है वजहे अताब[6]
ज़हे नसीब[7] मयस्सर[8] है वो बेहिश्त-ए-बरीं[9]

सलाम हो तेरी गलियों पे जो कुशादा[10] रहें
हमेशा मेरे लिये कल्ब-ए-दोस्ताँ[11] की तरह
मैं एक सरकश[12]-ओ-आवारा था मगर तूने
हमेशा बख़्श दिया है शफ़ीक[13] माँ की तरह

सलाम तेरी हवा को तेरी फ़ज़ा को सलाम
हैं जिनका दीन मेरा ज़ौक-ए-शेरो नग़मा गरी
खुलूस-ए-दिल से दुआ है रहे कयामत तक
मसर्रतों[14] के सितारों से तेरी माँग भरी

1— सँभलना 2— बदला 3— पत्थर 4— ईट 5— गेहूँ 6— सजा, गुस्सा 7— भाग्यवान 8— मिलना 9— जन्नत, स्वर्ग 10— फैली हुई, खुला हुआ 11— दोस्त का दिल 12— बागी 13— दयावान 14— खुशियाँ।

अहमद नदीम क़ासमी

समुद्र पार के फ़रिश्ता हाय रहमत से

न जाने कब से यह तिफ़्लाना[1] खेल जारी है
तुम्हारी 'उक़्दा कुशाई'[2] हमारी महरूमी[3]
मज़ाक़ पर उतर आती है जब शहंशाही
तो अपने आप को पहचानती है महरूमी
तुम्हारे ज़हन की यह मूशगाफियाँ[4] ही तो हैं
कि हुरियत[5] की ख़रीद-व-फ़रोख़्त[6] है दुश्वार
ख़िज़ाँ[7] के बाद यक़ीनन बहार आती है
नहीं है आदत-ए-फितरत को मसलहत दरकार
मुअर्रिख़ों[8] से कहो ख़ून में डुबोयें क़लम
बदल चुका है इरादे में इज़्तेराब[9] अपना
ख़िज़ा रहे कि बहार आये हर चे बाद आबाद
अब इक जक़न्द[10] का हो मुन्तज़िर[11] शबाब[12] अपना

1— बचकाना 2— गाँठ खोलना अर्थात् मुश्किल दूर करना 3— उम्मीद ना होना 4— बाल की खाल निकालने वाला 5— आज़ादी 6— बेचना 7— पतझड़ 8— इतिहासकार 9— बेचैनी 10— कूद फाँद, उड़ना 11— इन्तेज़ार 12— जवानी।

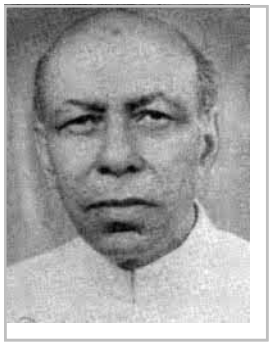

मोईन अहसन जज़्बी

नया सूरज

बड़े नाज से आज उभरा है सूरज
हिमालय के उँचे कलस[1] जगमगाये
कदम चूमने बर्क[2]-व-बाद[3] आब[4]-व-आतिश[5]
बसद शौक[6] दौड़े बसद इज्ज़[7] आये
मगर बर्क-व-आतिश के साये में ऐ दिल
ये सदियों के ख़ुद रफ्तह[8] नाशाद[9] तायर[10]
ये सदियों के पर बस्तह[11] बर्बाद तायर
ये हैं आज भी मुज़्महिल[12] दिल गिरफ्तह[13]
ये हैं आज भी अपने सर को छिपाये

1— चोटी 2— बिजली 3— बाद-हवा 4— पानी 5— आग 6— बहुत शौक के साथ 7— बहुत विनम्र 8— खोये हुए 9— दुखी 10— पक्षी 11— बंधे हुए पंख 12— मुरझाया हुआ, परेशान 13— दुखी।

साहिर लुधियानवी

ऐ शरीफ़ इंसानों

ख़ून अपना हो या पराया हो
नस्ल-ए-आदम[1] का ख़ून है आख़िर
जंग मशरिक[2] में हो कि मग़रिब[3] में
अमन-ए-आलम[4] का ख़ून है आखिर
बम घरों पर गिरें कि सरहद पर
रुह-ए-तामीर ज़ख्म खाती है
खेत आपने जलें कि औरों के
ज़ीस्त[5] फाक़ों[6] से तिलमिलाती है
टैंक आगे बढ़े कि पीछे हटें
कोख धरती की बाँझ होती है
फतेह[7] का जश्न[8] हो या हार का सोग[9]
ज़िन्दगी मय्यतों[10] पे रोती है
जंग तो खुद ही एक मसला[11] है
जंग क्या मसलों का हल देगी
आग और ख़ून आज बख़्शेगी
भूख और ऐहतियाज[12] कल देगी
इसलिए ऐ शरीफ इंसानों
जंग टलती रहे तो बेहतर है
आप और हम सभी के आँगन में
शमा जलती रहे तो बेहतर है

1— आदमी की नस्ल, आदम की औलाद 2— पूरब 3— पश्चिम 4— दुनिया की शांति 5— ज़िन्दगी 6— भूखा रहना, उपवास 7— जीत 8— खुशी 9— गम, दुख 10— मौत 11— उलझन, मामला 12— मोहताजी।

एजाज़ सिद्दीक़ी

नग्मा-ए-वतन

ऐ वतन, मेरे वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन
मुस्कुराती तेरी नदियां, गुनगुनाते आबशार[1]
लहलहाते खेत तेरे, निकहत आगीं[2] लाला ज़ार[3]
हर तरफ इक कैफ़[4]-ओ-मस्ती, हर तरफ रंग-ए-खुमार[5]
गुंचे गुंचे पर जवानी, पत्ते-पत्ते पर निखार
तेरी अर्ज़-ए-हुस्न पर फ़ितरत के लाखों शाहकार[6]
ज़र्रे-ज़र्रे से तेरे कैफ-ए-अज़ल[7] है जलवा बार
तू है मयख़ाना मेरा और मैं हूँ तेरा मयगुसार[8]
तुझ पे कुर्बां मेरी हस्ती, तुझ पे जान-ओ-दिल निसार[9]
ऐ वतन, मेरे वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन
तेरी मिट्टी से हुआ रूहानियत का इर्तिक़ा[10]
तू कि इक तहज़ीब का सदियों से गहवारा[11] रहा
दिलकुशा[12] तेरी हवा, तेरे मनाज़िर[13] जाँ फ़िज़ा[14]
मुख़्तलिफ रंगों में भी यकरंग[15] है तेरी अदा
आग तेरी दौलत-ए-दिल, ख़ाक तेरी कीमिया[16]
तुझ से अफ़ज़ल तर नहीं है कोई शय तेरे सिवा
तेरे दीवानों का कम होगा न अब दीवाना पन
ऐ वतन, ऐ वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन

1— झरने 2— खुशबू से भरा हुआ 3— लाल फूलों का खेत 4— नशा 5— नशे का उतार 6— किसी कलाकार की सर्वोत्तम कृति 7— जब से दुनिया बनी है 8— शराबी 9— कुर्बान 10— क्रमागत उन्नति 11— जन्म स्थान 12— आनंदमय 13— नज़ारे 14— माहौल 15— एक जैसा 16— रसायन।

साग़र निज़ामी

तरान-ए-आज़ादी

ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन
जाने मन, जाने मन जाने मन
ज़र्रे ज़र्रे में महफ़िल सजा देंगे हम
तेरे दीवार-ओ-दर जगमगा देंगे हम
तुझ को हस्ती का गुलाम बना देंगे हम
आस्मानों पे तुझ को बिठा देंगे हम
बन के दुश्मन तेरा जो उठेगा यहाँ
उसको तहत-उस-सरा में गिरा देंगे हम
और तहत-उस-सरा[1] को फ़ना के समुद्र मे
अर्थी बना कर बहा देंगे हम
ऐ वतन! ऐ वतन!!
सुन ले यह इंस-ओ-जान[2]-ओ-ज़मीन-ओ-ज़मन[3]
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन
जाने मन, जाने मन जाने मन

1— पाताल 2— इंसान और जिन्नात 3— ज़माना।

isd **इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी**

फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस, 62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका, नई दिल्ली-110067

टेलीफोन : 091-011-26177904, टेलीफैक्स : 091-011-26177904

ई-मेल : prakashan.isd@gmail.com, notowar.isd@gmail.com

वेबसाइट : www.isd.net.in

केवल सीमित वितरण के लिए